विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०६/१०/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-सप्तम: पाठनाम पर्यावरण- विज्ञानम्

गद्यांश:-ऋग्वेदे विभिन्नदेवतानां स्तुतय: सुविहाता: परं ता: देवता: प्राकृतिक शक्तीनाम् मानवीकरणमेवद्य ।यथा वैज्ञानिका: यां 'सौर ऊर्जा ' इति नाम्ना जानन्ति ; वेदेषु सैव सूर्यदेवतारूपेण संस्तुता ।एवमेव वैज्ञानिकानां कृते या वायूजा , वैदिकऋषिणां कृते सैव इन्द्रमरूदादय: संज्ञिता:। भारतवर्ष कृषि प्रधान देश:।तत्क्षेत्र समये पतिता वृष्टि:कृषि संवर्द्धयति । तदा वैज्ञानिक ऋषीणां कृतै: यज्ञै: तस्मिनोच्चरितै: मन्त्रै: यथासमयं वृष्टि: भवति स्म ।

अर्थ- ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं की स्तुतियां वर्णित है। लेकिन उन देवताओं को प्राकृतिक शक्तियों का आज मानवीकरण किया गया है। जैसे-जिसे 'सौर ऊर्जा'के नाम से जानते हैं; वेदों में वही सूर्यदेवता के रूप में पूजित हैं।इसी तरह से वैज्ञानिकों के लिए जो वायुजा है । वही वैदिक ऋषियों के लिए इन्द्र मरुत से नामित है ।भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है।इस क्षेत्र में समय हुई वर्षा खेती का सम्वर्द्धन करता है। तब वैदिक ऋषियों के लिए यज्ञों में उस उच्चरित मन्त्रों के द्वारा समय वर्षा होती थी ।